

## गर्भावस्था एवं मिरगी

### आप इस संबंध से जानकारी प्राप्त करें ....

महिला मिरगी रोगी भी सुखद रूप से गर्भधारण कर सकती है। मिरगी एवं मिरगी के दवाइयोंके कारण गर्भधारण कठीण होता है , तथोप रोग तथा दवाईयोंसे गर्भव्यवस्थापन भी कठीण हो सकता है। गर्भावस्था मे मिरगी के झटके कम या अधिक हो सकते है। चिकित्सक की उपयुक्त सलाह से गर्भवती महिला एवं शिशु के खतरे को टाला जा सकता है।

### मिरगी का गर्भावस्था पर क्या परिणाम होता है?

- इस अवस्था मे मिरगी आने पर गर्भवती महिला एवं शिशु को ऑक्सिजन की पूर्ती कम हो सकती है। मिरगी से समय पूर्व गर्भपात समयपूर्ण जन्म या विकृती जैसे परिणाम हो सकते है।
- मिरगी की दवाईयों कुछ जन्म दोष दे सकती है।
- गर्भावस्था मे ऐसी महिलाको दवाईयों प्रतिकुल असर कर सकती है। दवाएँ अधिक समयतक शरीर मे न रहने के कारण मिरगी का खतरा बढ़ता है। गर्भावस्था मे दवाओं की मात्रा मे गुणात्मक बढ़ती होती है।

### गर्भावस्था मे शिशु के निरोगी वृद्धि के लिए क्या करे?

नियमित रूप से सोनोग्राफी करते रहने से शिशु की वृद्धि पर ध्यान रखा जा सकता है। तथापि चिकित्सक को शिशु के हृदय एवं नसों की गति पर ध्यान देना होता है।

### प्रसूति पीडा के समय मिरगी आने पर क्या संभव है?

ऐसी अवस्था मे महिला को सलाईन के माध्यम से मिरगी की दवाएँ दी जाती है , जिससे शिशु सामान्य से अधिक निद्रा करता है। बालक पर दवाओं का कोई दुष्परिणाम ना हो इसपर विशेष ध्यान दिया जाता है।

### नवजात शिशु को स्तनपान सुरक्षित है क्या?

मिरगी की कुछ दवाएँ स्तनपान से प्रवाहित होती है, जिससे शिशु के शरीर मे जाती है। जिसके चलते बालक अधिक समय तक निद्रावस्था मे रह सकता है। स्तनपान से बालक को अनेक संसर्गजन्य रोगोंसे बचाया जा सकता है। एवं आकलन क्षमता मे वृद्धि होती है इस लाभो के चलते स्तनपान कराते समय मिरगी की दवाएँ दी जाती है।

### गर्भावस्था मे विशेष ख्याल रखे.

- मिरगी की दवाएँ प्रतिदिन नियत समय पर लें टाले नही दवाओं का उपयुक्त प्रयोग गर्भावस्था मे मिरगी को टाल सकता है।
- फोलिक अॅसिड एवं प्रसूतिपूर्व जीवनसत्व चिकित्सक की राय पर लेना चाहिए . मिरगी की दवाएँ लेने से रोगी का खतरा कम होता है। मिरगी रोगी महिला मे फोलिक अॅसिड कम हो सकता है। फोलिक अॅसिड के कारण शिशु मे जन्म से कोई अपाय होने का खतरा कम होता है। गर्भावस्था के प्रथम तीन महिनो मे फोलिक अॅसिड की पर्याप्त मात्रा लेनी चाहिए।
- रक्तजाँच नियमित आवश्यक- नियमित रक्त परिक्षण से मिरगी की दवाएँ किस प्रमाण मे दि जाएँ यह निर्धारित किया जाता है। उचित प्रमाण मे दवा लेने से मिरगी एवं नवजात शिशु मे शारिरिक विकलांगता का खतरा टाला जा सकता है। इस अवस्था मे अनेक बार दवाएँ बदली जा सकती है।
- शराब एवं मादक पदार्थ ना ले- शराब एवं मादक पदार्थ लेने से नवजात शिशु एवं महिला को मिरगी का खतरा बढ़ता है।
- पर्याप्त विश्रांती ले- पुर्ण निद्रा न होने से मिरगी का खतरा बढ़ता है थकावट लगने से थोडी थोडी देर नींद लेनी चाहिए।
- गर्भावस्था मे तनाव मे व्यवस्थापन करे- तनाव के कारण मिरगी भा सकती है ध्यान रखे प्रसूतीपूर्व योगासन या अन्य उपाय करे जिससे तनाव कम होगा।

### **निम्न बातोंपर विशेष ध्यान दे-**

- गर्भधारणा के पूर्व चिकित्सक की राय लें। नियमित रक्तपरिक्षण करे एवं रक्त में मिरगी की दवा उचित प्रमाण में रहना अत्यावश्यक है तब ही गर्भधारण हो।
- समय-समय पर आवश्यक दवाएं परिपूर्ण नींद आवश्यक है।
- योग्य आहार एवं वजनवृद्धि - जीवनसत्व एवं फोलेट का उचित मात्रा में गर्भावस्था के पूर्व गर्भावस्था में एवं पश्चात इस ओर ध्यान देना आवश्यक है।
- धूम्रपान, एवं शराब कॅफीन का उपयोग टालना चाहिए। गर्भवती महिला के लिए यह जरूरी है।
- उपरोक्त सभी तत्व ध्यान में रखते हुए मिरगी रोगी महिला भी गर्भधारण करने का आनंद ले सकती है।

### **Reference:**

Micromedex<sup>™</sup>s Care Notes System Online 2.0